# मानव मानव ही रहे, यही बड़ी है बात

ISSN: 2583-8849
साहित्य रत्न ई-पत्रिका अगस्त2023 वर्ष1 अंक4

करो न जीवन में कभी, ऐसा खोटा काम।
जिसके पश्चाताप में, बीते उम्र तमाम।।-1

कल क्या होगा भूल जा , मत कर कल को याद।
अच्छा हो यदि आज से, कर ले तू संवाद ।।-2

करते जो माँ-बाप की, सेवा भली प्रकार ।
खुल जाते उनके लिए, स्वत: स्वर्ग के द्वार।।-3

उगता सूरज भोर का, देता है संदेश।
हुआ एक दिन और गत, था जीवन जो शेष।।-4

कुछ कहते , कुछ सोचते, करते हैं कुछ और।
ऐसों का ही चल रहा, वर्तमान में दौर।।-5

आ जाता है एक दिन, इस जीवन का अंत ।
तृष्णा कम होती नहीं, पर जीवन पर्यंत ।।-6

सुख भोगें गुणहीन नर, दुख भोगें गुणवान ।
कीर पींजरे में रहे, कागा भरे उड़ान।।-7

एक ओर सद्ग्रंथ हो, एक ओर हों रत्न ।
रत्न त्याग सद्ग्रंथ की, करो प्राप्ति का यत्न ।।-8

सदा न सरसों फूलती, सदा न उगती धान।
सदा नहीं यौवन रहा, सदा न रहे गुमान।।-9

कोयल मगन बसंत में, वर्षा ऋतु में मोर।
काग कनागत में मगन, रात अंधेरी चोर।।-10

पत्ता टूटा शाख से, हवा ले गई दूर ।
कभी न होगी भेंट अब, नियति बड़ी है क्रूर।।-11

बने न मानव देवता, बने न दानव जात।
मानव मानव ही रहे, यही बड़ी है बात।।-12

डॉ. शंकर शरण लाल बत्ता
पिता : स्व. कविरत्न दामोदर दास बत्ता
माता : स्व. धनकुंवरि बत्ता
जन्म तिथि: २३-७-१९३७
शिक्षा: एम.ए., एल.टी.
व्यवसाय: सेवानिवृत उपसंचालक, शिक्षा, म.प्र.शासन.
प्रकाशित काव्यकृतियां:
1. प्रियदर्शिनी, 2. मणि पुष्पक (गीत संग्रह),
3. वीरांगना लक्ष्मीबाई,
4. अमर शहीद सरदार भगत सिंह, 5.मांडवी,
6. आंजनेय हनुमान, 7.सीता परित्याग, 8.भावांजलि,
9.नचिकेता,
10.यादों के झरोखे से, 11.बिखरे मोती,
12.क्षितिज के पार.
पन्द्रह संकलनों में प्रकाशित रचनाएं।
लगभग तीस पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनाएं ।
प्रशस्ति एवं सम्मान:
हिंदी भवन,भोपाल, म.प्र. हिंदी लेखिका संघ भोपाल, साहित्य मंडल, श्री नाथ द्वारा, विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ, भागलपुर (बिहार) आदि तीस संस्थाओं द्वारा सम्मान
स्थाई पता: 4/73, क्षत्रसाल नगर, फेस-2, भोपाल